आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editorbabuji@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
गंगाधर घुमाडे • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव • मुकुंद कुलकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य •गोपाल सत्पुरे
छायाचित्र : मुखपृष्ठ १ - स्थानीय छायाचित्रकार,
२ व ३ बेला जैन, इंदौर, मुखपृष्ठ ४ - प्राचार्य सदाविजय आर्य

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -	नई सरकार से नई व पुरानी अपेक्षाएँ	५
आंतर भारती - १	तुका म्हणे	८
आंतर भारती - २	बसव वचन	१०
आंतर भारती - ३	तिरुवल्लुवर वाणी	११
काव्य भारती - १	पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल	१२
विशेष आलेख - १	शब्द शक्ति की महिमा	१३
विशेष आलेख - २	साने गुरुजी	१७
चिंतन भारती - १	घटते गांव से गहराता खाद्य संकट	२०
समाचार भारती-१	आंतर भारती (गुजरात) कार्यविवरण	२३
समाचार भारती-२	इन्दौर में पंढरपुर सत्याग्रह एवं यदुनाथ जी थत्ते स्मृति समारोह का आयोजन	२९
समाचार भारती-३	''बहुभाषाई कम्प्यूटिंग एवं शिक्षण तथा अधिगम में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग'' विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित	३४

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com
लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

संपादकीय...

नई सरकार से नई व पुरानी अपेक्षाएँ

मई २०१४ के चुनावी परिणामों के आधार पर नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार ने २६ मई, २०१४ को शपथग्रहण के साथ ही अधिकार ग्रहण किया है. अधिकांश मंत्री पदों का आवंटन का कार्य भी पूरा हो चुका है और अब सरकार की शासन-व्यवस्था उसकी अपनी रीती-नीति के आधार पर चलने लगेगी. सरकार की बागड़ोर संभालने से पूर्व ही मोदी ने एक अच्छी शुरूआत की है दक्षिण एशियाई देशों के प्रमुखों को शपथ ग्रहण समारोह के अवसर पर आमंत्रित करके. वैसे असंख्य बेकसूर तमिल-भाषी श्रीलंका नागरिकों के विरुद्ध तथाकथित भीषण नरसंहार के कर्ता के रूप में श्रीलंका के राष्ट्रपति महींद राजपक्षे के विरुद्ध आरोप लगाते हुए तमिलनाडु सरकार व अन्य राजनीतिक दलों ने उन्हें आमंत्रित करने को लेकर भले ही रोष जताया. यह रोष अपनी जगह जायज़ है ही, मगर आए दिन अड़ोस-पड़ोस की अशांति व अन्य कई समस्याओं, यहाँ तक कि तथाकथित श्रीलंका के नरसंहार के संबंध में अंतर राष्ट्रीय अभिकरणों द्वारा जाँच की मांग को कार्यान्वित करवाने के लिए यदि श्रीलंकाधीश को प्रेरित करना हो, या आए दिन इधर-उधर हिरासत में लिए जा रहे मछुवारों को मुक्त करवाना हो, ऐसे तमाम मुद्दों में बड़े विवाद की जगह पहले संवाद का माहौल बनना ज़रूरी है. जब स्वयं अधिकांश राष्ट्र प्रमुखों का स्वयं पधारना सुनिश्चित हो रहा था, यह संवाद के लिए स्वर्णिम अवसर था, विवाद का मुद्दा नहीं बनना चाहिए. अड़ोस-पड़ोस के साथ सुदृढ़ संबंध शांति व समृद्धि के मूल मंत्र हैं, इसे जरूर ध्यान में रखने की जरूरत है. पड़ोसियों से मैत्री-संबंधों के विकास और आतंकवादी गतिविधियों से मुक्ति से रक्षा के लिए आबंटित हो रही बड़ी राशि को कल्याणकारी योजनाओं पर लगा सकते हैं.

वैसे नई सरकार से विभिन्न वर्गों की कई अपेक्षाएँ होंगी, हर कोई अपना हितवर्धन की मांग करेंगे, कई नई व पुरानी अपेक्षाएँ सबकी होंगी. तमाम

उम्मीदों की लंबी-चौड़ी सूची बन जाती है. (जानबूझ कर यहाँ ऐसी कोई सूची नहीं पेश की जा रही है) ऐसी सूचियों की उम्मीदें तभी पूरी हो पाएंगी जब दुनिया के बड़े लोक तंत्र में जनादेश की सार्थकता की मर्यादा के पालन के लिए चुनी गई सरकार प्रतिबद्ध हो जाती है. यह तो स्पष्ट है कि नई सरकार अपनी घोषित, अघोषित नीतियों, घोषित घोषणापत्रों, भविष्य में उत्पन्न होने वाली स्थितियों में तय होनेवाली रणनीतियों के आधार पर ही शासन व्यवस्था चलाती रहेगी. प्रधानमंत्री के रूप में पद सम्हालने से पूर्व ही मोदी जी ने यह घोषणा की है कि वे गरीबों के पक्ष में काम करना चाहेंगे. ऐसी तमाम घोषणाएँ दोनों सदनों में पारित होनेवाले विधेयकों, गठबंधन के अन्य गठकों के चिंतन व सहयोग, शासक पक्ष व अधिकारी-वर्ग में ताल-मेल आदि पर निर्भर होकर ही साकार हो पाएंगी. सफल नेतृत्व अपनी पूरी टीम को सफलता के राह पर ले जा सकती है. नई सरकार अभी-अभी अपने अधिकार संभालने की कवायद पूरी कर चुकी है, अतः उससे यह उम्मीद की जा सकती है कि वह सभी वर्गों की नई पुरानी अपेक्षाएँ पूरी करें. भाजपा के चुनाव घोषणापत्र में एक नारा यह भी शामिल था - ''सबका साथ और सबका विकास ।'' यह नारा प्रथम दृष्ट्या अच्छा ही लगता है, मगर विगत छः-सात दशकों में बनी विभिन्न केंद्र व राज्यों में बनी सरकार के मंत्रियों, पदाधिकारियों में कितने ही ऐसे साबित हुए जो चुनाव से पूर्व ग़रीब होते हुए भी चुनावी पदों या अधिकारिक पदों के संभालने के बाद करोड़पति बनने लग गए. वर्तमान चुने गए सांसदों के संबंध में भी अखबारों में कई आंकड़ें आए दिन प्रकाशित हो रहे हैं, उनमें निराशा जगाने वाला एक आंकड़ा अपराध प्रवृत्ति वाले, भ्रष्ट प्रवृत्ति वाले उम्मीदवारों को लेकर भी है. जनतंत्र के लिए यह बड़ा कलंक है कि धन बल व बाहु बल के आधार पर नेता विकसित होकर ग़लत रास्तों से देश को लूटना शुरू कर देते हैं और शून्य से शिखर तक उनका विकास जारी रहता है. ऐसे कई प्रत्यक्ष उदाहरण जो जनता के समक्ष है, उस परिदृश्य को बदलना और भ्रष्टाचारमुक्त पारदर्शी शासन व्यवस्था को स्थापित करने के लिए काम करना नए नेतृत्व की प्राथमिकता बन जाए, ऐसी आशा व अपेक्षा है. भ्रष्टाचार मुक्त शासन की तमाम योजनाएं सार्थक व संयोजित होकर उसके फल तमाम नागरिकों को

मिलना संभव हो पाएगा. 'सबका साथ और सबका विकास' भी इसी आशय का ही साबित हो और इसमें भ्रष्टाचारी व अपराधी शामिल न हो ऐसी उम्मीद को सरकार पूरी करें. इतिहास इसका साक्षी रहा है कि अधिकार का दुरुपयोग करते हुए अपराधी व भ्रष्टाचारी बड़ी आसानी से विकसित हो गए हैं. मोदी जी स्वयं आशावादी हैं, उनसे तमाम उम्मीदें रखना भी आशावादी अभिलक्षण है. आशा है, नई सरकार भ्रष्ट और अपराधी प्रवृत्तिवालों में आत्म-परिवर्तन के लिए प्रेरणा देगी और सब दोषियों को त्वरित न्यायिक जाँच के लिए आदेश देकर उचित कार्रवाई करेगी. सब क्षेत्रों में जो भी अपेक्षाएँ हैं, उनको पूरा करने में पूरी ईमानदारी के साथ सरकार काम करेगी, यही उम्मीद है. कई दशकों से ग़रीबी हटाने की घोषणाएँ अपनी जगह रह गई हैं, अब भी देश में कई रूपों में गरीबी व कई विडंबनात्मक स्थितियाँ मौज़ूद हैं, आशा है, निकट भविष्य में इस दिशा में स्थितियों में सुधार आ जाए, इसके लिए नई सरकार से जो अपेक्षाएँ की जानी चाहिए, उन्हीं उम्मीदों से सबकी निगाहें सरकार पर टिकी हैं. आज ई-शासन की कल्पना की जा रही है, मगर जब तक सभी स्तरों पर पूरी निष्ठा से जनता की समस्याओं, अपेक्षाओं, शिकायतों, अर्जियों, दावों पर समय पर या निश्चित समयावधि में काम पूरी करने या उचित कार्रवाई करने में पूरी ईमानदारी और ऐसा न होने पर जवाबदेही नई प्रौद्योगिकी के आधार पर तय न हो तो ऐसी व्यवस्था पर जनता का भरोसा भी समाप्त हो जाएगा. आशा है, जनादेश की मर्यादा का पालन करने में सरकार पूरी ईमानदारी से कार्य करेगी. 'आंतर भारती' आगामी अंकों में ऐसी तमाम अपेक्षाओं की ओर विशेष लेखों, चिंतन के माध्यम से प्रकाश डालेगी. आशा है, सरकारी तंत्र अपने घोषणाओं की पूर्ति के लिए पूरी निष्ठा से संलग्न हो जाएगी. देश के विकास के साथ देश में मानवीय मूल्यों के विकास के लिए काम करने की बड़ी जरूरत है. देश के आर्थिक पक्ष को मज़बूत बनाने में सभी क्षेत्रों में विकास का जितना महत्व है, भ्रष्टाचार से मुक्ति का उससे दुगुना महत्व है, इसीसे विकास के सच्चे फल सबको मिलने लगेंगे. निष्ठापूर्ण व ईमानदार जनसेवा में पूर्ण सफलता के लिए नई सरकार को अग्रिम बधाई सहित...

सी. जय शंकर बाबु

तुकाम्हणे

(मराठी)

संवसारतापें तापलों मी देवा

संवसारतापें तापलों मी देवा । करितां या सेवा कुटुंबाची ।।ध्रु।।
म्हणऊनी तुझे आठविले पाय । ये वो माझे माय पांडुरंगे ।।१।।
बहुतां जन्मींचा जालों भारवाही । सुटिजे हें नाहीं वर्म ठावें ।।२।।
वेढियेलों चोरीं अंतर्बाह्यत्कारी । कणव न करी कोणी माझी ।।३।।
बहु पांगविलों बहु नागविलों । बहु दिवस जालों कासाविस ।।४।।
तुका म्हणे आतां धांव घाली वेगीं । ब्रीद तुझें जगीं दिननाथा ।।५।।

हिन्दी भावानुवाद :

'पतित-सहाई, रक्षा कर मेरी'

जग-प्रपंच के दुःख ताप से, तप्त हुआ हूँ ज्वाल-दाह से ।
करते हुए कुटुंब की सेवा, थक कर चूर हुआ हूँ, देवा ।।१।।
इसीलिए आया चरणों में, स्मरण किया संकट-वेला में ।
आ री मेरी विठ्ठल मैया, कृपा का दूध पिला दे मैया ।।२।।
कई जन्म से ढोते आया, घर का भार उठाते आया ।
इस फंदे से निकलूँ, समझ न आता, जतन क्या करूँ ।।३।।
चोर घुसे हैं घर के भीतर, घेर लिया है बाहर से घर ।
कौन बनेगा मेरा त्राता, मुझ पर किसी को रहम न आता ।।४।।
त्रस्त हुआ हूँ, ठगा गया हूँ, अब तक लुटता ही आया हूँ ।
ना जाने कितने दिन बीते, दर्द-व्यथा को सहते-सहते ।।५।।
तुका कहे अब आ दौडकर, शीघ्र बचाले मुझको आकर ।
पतित-सहाई तू कहलाता, तेरा यश सारा जग गाता ।।६।।

हिन्दी : प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार
परिमल २८/८१, विद्यानगर, उस्मानाबाद (महा.).

English Translation

I am boiling in the cauldron of this worldly life

Samsaara taape taapalon

I am boiling in the cauldron of this wordly life,
While I am serving my family selflessly.
Hence do I remember your feet.
Please[my Panduranga[1].
The Universal Mother[come rushing to me.

I know I am burdened,
With the effects of the deeds of past lives;
I do not know how to break free from them.
I feel robbed on all sides, inside out,
And no one take pity on me.

I am deprived and deceived.
I am highly disturbed and confused.

Oh Saviour of the downtrodden,
Prays TUKA, as per your wont,
Please come rushing to save me.

Panduranga - God Almighty, Vithala, venerated as the Universal Mother

---

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

लोक स्वराज्य मंच का धरना

१३ से २२ जून तक जंतर मंतर, नई दिल्ली पर

मांगें

◆परिवार, गांव, जिला को संवैधानिक अधिकार ◆राईट टू रिकाल

◆ लोक संसद ◆प्रतिव्यक्ति रु. २०००/- प्रतिमाह

जीवनभत्ता

बसव वचन

मूल कन्नड वचन -

यन्न चित्तवु अत्तीय हण्णु नोडय्य
विचारिसि दोडेनू हुरुळिल्लवय्य
प्रपंचीनडं बिनल्लि यन्ननोंदु
रुपमाडि नीविरिसिदिरि कूडल संगम देव !

हिंदी काव्यानुवाद :-

मेरा मन गुलर के पके हुए फल जैसा है
सोचे तो उसमें सत्य नहीं है
इस संसार में मुझे शांति प्रदान कीजिए
कूडल संगम देव ।

भाष्य - इस वचन में मनुष्य की मानसिकता को स्पष्ट करने हेतु गुलर के पके हुए फल का उदाहरण देकर यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि उसके मन में अनगिनत चिंतायें, कुविचार भरे होते हैं. उनसे वह मुक्त नही होता. ऊपर से गुलर का पका हुआ फल सुंदर तथा एक लगता है लेकिन अंदर से उसका चित्त एक नहीं होता. कई विचारोंसे आक्रांत होता है. ऐसे इस संसार में मेरे मन में शांति बनाये रखे यही मेरी आपसे प्रार्थना है. उस एकमात्र ईश्वर को छोडकर इस संसार में शाश्वत कुछ भी नहीं है.

इस वचन के माध्यम से महात्मा बसवेश्वरजी ने सर्वसामान्यों की मानसिकता को चित्रित किया है.

- डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी
- 'विद्या', १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, बिजापूर रस्ता, सोलापुर - ४१३००४
०२१७-२३४२१९४, ०९३७१०९९५००

तिरुवल्लुवर वाणी
तिरुक्कुरल

तमिलमूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद -
डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
इल्लऱ़वियल् (गृहस्थ-धर्म)
अध्याय ५. वाऴक्कैत्तुणै नलम् (सहधर्मिणी के गुण)

देयवन् तोऴाअळ् कोऴनन् तोळुदेऴवाळ्
पेय्येनप् पेय्युम् मऴै। (कुरल - ५५)

पति पूजक
स्त्री का आदेश माने
मेघ बेशक ।
भावार्थ - दैवी उपासना भले ही न करे मगर पति की पूजा करने वाली स्त्री की बात बादल भी मानते हैं।

तन्कात्तुत् तन्कोण्डार् पेणित् तहै चान्ऱ़
चौकोत्तुच् चोर्विलाळ् पेण् । (कुरल - ५६)

शील रक्षक,
पति-सेवक पत्नी
श्रेष्ठ गृहिणी ।
भावार्थ - अपने सतीत्व की रक्षाकर, पति की सेवा करनेवाली गृहिणी उत्तम है।

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

- टी.ई.एस.राघवन

ऊटी

'ऊटी' छोटा शहर है, जिसमें हैं उद्यान ।
बोटेनिकल गार्डन भी, सुन्दर विराजमान ।।
'वेनलाक हाउस' स्थान है अजपालन केन्द्र ।
ऊटी पुर के पास है फोटो फिलमें केन्द्र ।।
ऊटी समीप 'कोटगिरि' दर्शनीय है स्थान ।
ऊटी समीप कुन्नूर चाय उपज का स्थान ।।
सवार होकर करी पर, चलते पथिक अरण्य ।
उटी-समीप 'मुदुमलै' सुविदित अभयारण्य ।।

- १, हनुमंतरायन मंदिर गली,
ट्रिप्लिकेन, चेन्नई - ६०००००५.

श्रद्धांजलि !

मा.परीट गुरुजी
व
मा.सुधाताई वर्दे
के निधन पर आंतर भारती की ***श्रद्धांजलि !***
दोनों ही साने गुरुजी के कार्य में सारा जीवन अर्पित किए हुए थे.

शब्द शक्ति की महिमा

- डा.रवीन्द्र अग्निहोत्री

कहा गया है कि शब्द में बडी शक्ति होती है, अंग्रेजी कहावत भी प्रसिद्ध है, "Pen is mightier than sword." इसमें लिखित शब्द का ही तो प्रतीक है. संस्कृत में तो यहाँ तक कहा गया है कि ''एक शब्दः सम्यक् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गलोके कामधुक् भवति'' एक शब्द को ही अगर ठीक से जान लिया जाए, उसका ठीक से प्रयोग किया जाए तो सारी कामनाएं पूरी हो सकती हैं. शायद इसीतिए कुछ लोग किसी शब्द/मंत्र आदि का देर तक जाप करते हैं या कागज पर प्रतिदिन उसे बार-बार लिखते हैं. कोई १०१ बार तो कोई १००१ बार, और कोई तो उसका कीर्तन ही करते हैं. इससे उस शब्द / मन्त्र की शक्ति बढ़ी या उनहें कोई लाभ हुआ - इसका तो मुझे कोई प्रमाण नहीं मिला. पर हाँ, ऐसे अनेक लोग मिले हैं जिनके जीवन की दिशा बदलने में किसी विद्वान के मौखिक अथवा लिखित शब्दों ने विशेष भूमिका निभाई. स्वामी दयानंद सरस्वती से शंका समाधान करने के बाद मुंशीराम का (जो बाद में स्वामी श्रद्धानंद बने) या रामकृष्ण परमहंस से वार्तालाप करने के बाद नरेन्द्र नाथ दत्त का (जो बाद में स्वामी विवेकानंद बने) जीवन बदलने के उदाहरण हम सबके सामने हैं. अनेक धार्मिक ग्रंथों ने तो लोगों के जीवन को बदला ही है, अन्य प्रकार की पुस्तकों ने भी ऐसा करिश्मा किया है. जान रस्किन की अर्थशास्त्र संबंधी पुस्तक 'अन टु दिस लास्ट' (१८६२) से गाँधी जी का परिचय १९०४ में हुआ औरइसी पुस्तक ने गाँधी जी को 'सर्वोदय' का विचार दिया (गाँधी जी ने सर्वोदय नाम से ही इस पुस्तक का गुजराती में अनुवाद १९०८ में किया था) एवं इसी पुस्तक ने फोनिक्स आश्रम की स्थापना की प्रेरणा दी. कथा, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि को हम प्रायः मनोरंजन की ही सामग्री मानते हैं, पर इस सामग्री में भी ऐसे रत्न छिपे हुए हैं जिन्होंने गंभीर पाठकों का जीवन बदल दिया. ऐसा ही एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है.

चेन्नई (तत्कालीन मद्रास) में १८ जुलाई १८७८ को जन्मे एम.वेंकटसुब्बाराव

एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे. मद्रास क्रिश्चिन कालेज से ग्रेजुएशन करने के बाद उन्होंने वकालत की परीक्षा पास की और उस समय के एक प्रसिद्ध वकील सर सी.वी.कुमारस्वामी शास्त्री के सहायक के रूप में लगभग एक वर्ष काम करने के बाद जुलाई १९०४ में अपने एक सहपाठी राधाकृष्णैया के साथ अपनी फर्म बनाकर स्वतंत्र रूप से प्रैक्टिस शुरू की. शीघ्र ही उनकी प्रसिद्धि एक योग्य - विद्वान वकील के रूप में होने लगी. उनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर जब उन्हें १९२१ में मद्रास हाईकोर्ट का जज बनाया गया तो यह घटना दो दृष्टियों से विशेष बन गई. पहली तो यह कि स्वतंत्र वकालत करने वाले पहले वक्ति थे जिसे जज बनाया गया और दूसरी यह कि अन्य जजों की तुलना में वे उस समय सबसे कम उम्र के जज थे. बाद में १९३९ में मद्रास के चीफ के रूप में वे रिटायर हुए. इसके बाद हैदराबाद के निजाम ने भी उन्हें बरार का एजेंट बनाकर उनकी योग्यता का लाभ उठाया.

जज बन जाने के बाद १९२२ में उन्होंने अंडाल अम्मा नामक जिस युवती से विवाह किया वह यों तो संपन्न परिवार की महिला थीं, सुशिक्षित थीं जो उस जमाने में बड़ी बात थी, पर कम उम्र में ही विधवा हो गई थीं. हमारे समाज में विधवा की स्थिति तब कैसी होती थी, यह सर्व विदित है. फिर तत्कालीन समाज में, और वह भी उच्च वर्ग में विधवा - विवाह करना बहुत बड़ा क्रांतिकारी कदम था. वेंकटसुब्बाराव साहसी व्यक्ति थे, समाज सुधार के बहुत बडे समर्थक थे. स्त्रियों की दुर्दशा दूर करने के लिए तो मानों वे कृतसंकल्प थे. अतः विवाह के लिए वे स्वयं आगे आए.

वे अध्ययनशील भी थे और उनकी रुचि कानून के अलावा साहित्य में भी थी. देश में उन दिनों कहानीकार के रूप में प्रेमचंद की ख्याति फैल रही थी. उनके साहित्य का अन्य भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद किया जा रहा था. प्रेमचंद की एक कृति का तमिल अनुवाद वेंकटसुब्बा राव ने पढ़ा. उस पुस्तक ने उनके दिल - दिमाग में हलचल पैदा कर दी. उन्हों अपनी पत्नी को भी वह पुस्तक पढने के लिए प्रेरित किया. उसे पढने पर उनकी पत्नी भी सोच में डूब गई. आपस में विचार-विमर्श करके उन्होंने एक संस्था की स्थापना करने का

निश्चय किया. उस संस्था ने मद्रास के सामाजिक जीवन की भी दिशा बदल दी. प्रेमचंद की उस पुस्तक का नाम था ''सेवा सदन''.

जो पाठक सेवा सदन से परिचित न हों उन्हों बता दूँ कि प्रेमचंद का यह उपन्यास अनमोल विवाह की समस्याओं पर आधारित है. जो उन दिनों बहुत प्रचलित था. नायिका अपने अनमेल विवाह से त्रस्त है, पारिवारिक समस्याओं से जूझ रही है. उसका असंतोष उसे इस कदर तोड़ देता है कि वह वेश्यावृति अपनाने में भी संकोच नहीं करती, पर शीघ्र ही उसे अपनी भूल का अहसास होता है और फिर वह अपनी भूल का प्रायश्चित करते हुए एक ऐसा अनाथालय खोलती है जहां वेश्याओं की बच्चियां रखी जाएँ. उन्हें शिक्षा पाने की सुविधा मिले ताकि वे समाज में सम्मानजनक रूप से जी सकें और उनके इस गर्त में गिरने की संभावना न रहे. इस अनाथलय का ही नाम है, ''सेवा सदन''.

यह उपन्यास प्रेमचंद ने पहले उर्दू में ''बाज़ार - ए - हुस्न'' नाम से लिखवा था, पर आर्य समाज उन दिनों समाज सुधार का सबसे बड़ा आन्दोलन था, प्रेमचंद जब उसके संपर्क में आए तो एक ओर तो उन्हें हिंदी के महत्व का अनुभव हुआ और दूसरी ओर सामाजिक समस्याओं के केवल चित्रण नहीं, बल्कि उनके समाधान की ओर भी उनका ध्यान गया. परिणामस्वरूप उन्होंने इसे हिंदी में 'सेवा सदन' के नाम से लिखवा और कथानक में भी परिवर्तन कर दिया. उर्दू उपन्यास दुखांत था, उसमें नायिका अंत तक वेश्या ही बनी रहकर पछताती रहती है, वहीं हिंदी उपन्यास में नायिका को सन्मार्ग पर लाकर उसे सुखान्त बना दिया है. संयोग से छपकर यह उपन्यास हिंदी में पहले ही १९१९ में आ गया जबकि उर्दू में पांच वर्ष बाद १९२४ में आया. हिंदी उपन्यास में प्रेमचंद को आर्थिक लाभ भी हुआ. उन्हें रायल्टी के रूप में ४५० रु. मिले, जबकि उर्दू उपन्यास से बहुत जद्दो-जहद करके २५० रु. ही मिल पाए.

वेंकटसुब्बा राव और अंदाम अम्मा को इस उपन्यास का अंत बहुत पसंद आया. स्त्रियाँ की दुर्दशा को सुधारने का उन्हें एक अच्छा उपाय लगा. उन्होंने १९२८ में जिस संस्था की स्थापना की, उसका नाम 'सेवा सदन' ही रखवा. स्त्रियों की शिक्षा की व्यवस्था करना और आश्रयहीन स्त्रीयों को आश्रय एवं

सुरक्षा प्रदान करना इस संस्था का मुख्य उद्देश्य बनाया. इस कार्य के लिए उन्होंने अपनी कई एकड़ ज़मीन तथा महलनुमा कोठी उसे दान कर दी. उनकी पत्नी ने भी अपनी सारी जायदाद, अपने गहने, हीरे-जवाहरत सब कुछ उस सेवा सदन के नाम लिख दिया. इस युग की इन सेवाओं का सम्मान जनता ने तो किया ही सरकार ने भी किया. अँगरेज़ सरकार ने वेंकटसुब्बा राव को १९३८ में 'सर' की उपाधि से विभूषित किया तो आज़ादी मिल जाने के बाद सरकार ने अंडा वेंकटसुब्बा राव के योगदान की सराहना करते हुए उन्हें १९५७ में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया.

''मद्रास सेवा सदन'' की जब लोकप्रियता बढ़ने लगी तो फिल्मकारों का भी ध्यान इस ओर गया. फिल्म निर्देशक / निर्माता के, सुब्रमण्यम ने मद्रास युनायटेड आर्टिस्ट कारपोरेशन के बैनर तले ''सेवा सदनम'' नाम से १९३८ में फिल्म बनाई जिसके कथा लेखक के रूप में प्रेमचंद का नाम दिया गया. तमिल फिल्म इंडस्ट्री में यह युगांतरकारी फिल्म सिद्ध हुई. यद्यपि रूढ़िवादी लोगों ने इसका जमकर विरोध किया, पर फिल्म जबरदस्त रूप में सफल हुई. एस.सुब्बुलक्षमी (१९१६-२००४) यों तो गायिका थीं, पर उन्होंने कुछ विशिष्ट फिल्मों में यादगार अभिनय भी किया. सेवा सदनम ही वह फिल्म थी जिससे उन्होंने अपने फिल्मी कैरियर की शुरूआत की थी.

वेंकटसुब्बा राव और अंडाल अम्मा ने जो स्वप्न देखा था, यह ''मद्रास सेवा सदन'' (और बेंगलुरु में भी ''अभय निकेतन'') के रुप में साकार हुआ. जहाँ आज यह धर्मार्थ संस्था के रूप में रजिस्टर्ड है और इसके अंतर्गत एक दर्जन से अधिक संगठन नारी उत्थान एवं समाज कल्याण के लिए कार्य करके न केवल उनकी यशःकीर्ति की पताका फहरा रहे हैं बल्कि प्रेमचंद का भी अद्वितीय स्मारक बन गए है.

साहित्य समाज को कैसे प्रभावित कर सकता है, यह इसका जीता-जागता उदाहरण है. शब्द शक्ति की यह अनूठी मिसाल है.

पी/१३८, एम.आई.जी, पल्लवपुरम-२, मेरठ २५०११०
agnihotriravindra@yahoo.com

विशेष आलेख - २

(११ जून, मृत्यु दिवस पर)

साने गुरुजी

- यदुनाथ थत्ते

रत्नागिरी जिले के पालगड गांव में साने गुरुजी (पांडुरंग सदाशिव साने) का जन्म २४ दिसम्बर १८९९ के दिन हुआ था. उनके पिता बडवली नामक छोटे-से गांव के एक परोपकारी खोत (एक तरह के जमींदार) थे गुरुजी लोकमान्य तिलक के बडे भक्त थे और उस जमाने में स्वदेशी आंदोलन में जेल हो आये थे. गुरुजी की माता भी एक बेजोड स्त्री थीं. उन्हें गरीबी में अनेक आफतों का मुकाबला करते हुए जिन्दगी काटनी पडी. पर छोटे-छोटे प्रसंगों को लेकर उन्होंने बच्चों को खूब संस्कारवान बनाया. अपनी माता से गुरुजी बहुत प्यार करते थे. घर की गरीबी के कारण माता को आपदाएं झेलनी पडती थी उनको, खूब पढकर, दूर करने का सपना वह बचपन में देखा करते थे.

विद्या के लिए गुरुजी को कडी मेहनत करनी पडी. पाठशाला की फीस नहीं दे सकते थे, खाने के भी लाले पड जाते थे. घर की हालत दिन-ब-दिन गिरती जाती थी. लेकिन माता का अरमान पहुंचाने की एक ही धुन उन पर सवार थी; दुर्भाग्य से मैट्रिक पास होने के पहले ही उनकी अनुपस्थिति में उनकी माता स्वर्ग सिधार गई. लिखने-पढने में अब उनको रस न रहा, लेकिन बाद में संभल गये. यह मानकर कि शरीर की कोई माता नहीं है, शरीर से परे मातृ-भावना है और उसका विकास करना ही सच्ची मातृ-सेवा है, गुरुजी फिर से पढने-लिखने लगे. काफी कष्ट उठाकर एम.ए.पास किया. तब भारती तत्वज्ञान-मंदिर छोड दिया और वहां के हाईस्कूल में शिक्षक बन गये. यहां पर उन्होंने छात्रावास का काम भी लिया. वह छात्रों की माता-से बन गये. अपने व्यवहार से उन्होंने छात्रों को ऐसी शिक्षा दी कि विलासप्रिय युवक त्यागी और उद्धत संयमी बनने लगे.

गुरुजी पढाते भी खूब अच्छी तरह थे. स्कूल का पाठ्यक्रम अपर्याप्त समझकर उन्होंने वहां एक हस्तलिखित दैनिक पत्र शुरू कर दिया. यह एक अनोखी चीज थी. स्कूल के छः घंटों में जो शिक्षा न मिलती. वह दैनिक से मिल जाती थी. बाद में इसी कल्पना को बढावा देने के लिए 'विद्यार्थी' नाम का एक छपा मासिक भी निकलने लगा. जो आंदोलन के समय सरकार ने बन्द करवाया. असहयोग-आंदोलन शुरू होते ही वह उसमें दाखिल हुए. उनके विद्यार्थियों ने भी बडी संख्या में उनका साथ दिया. गुरूजी का प्रभाव साथी कैदियों पर गहरा

होता देखकर सरकार ने उन्हें महाराष्ट्र से दूर त्रिचनापल्ली की जेल में भेज दिया. वहां दक्षिण की भाषाओं से गुरुजी का अच्छी तरह परिचय हुआ. भाषाएं भले ही भिन्न हों लेकिन सब प्रांतों में भावनाओं की एक अनोखी समानता. यह बात गुरुजी को महसूस हुई ? गुजराती तथा बंगला तो वह पहले से ही जानते थे. कविवर रवीन्द्रनाथ की विश्वभारती की तरह भारत के विभिन्न प्रांतों की भाषा, कला, संस्कृति आदि का परिचय करानेवाली आन्तर भारती संस्था स्थापित करने की बात यह सोचते थे. १९३० के आंदोलन से रिहा हुए कि १९३२ के आंदोलन में उन्हे पुनः गिरफ्तार करके धुलिया जेल में ठूस दिया गया.

धुलिया जेल में तब विनोबा और जमनालालजी आदि लोग थे. इस बार सारे महाराष्ट्र से बडी तादाद में नवयुवक जेल में आये थे. उन्हें संस्कारपूरित करने का काम गुरुजी पर आ गया. तबतक साने गुरुजी सानेसर कहलाते थे लेकिन १९३२ के बाद वह सारे महाराष्ट्र के गुरुजी बन गये. सभी हर इतवार को गीता पर प्रवचन देना विनोबाजी ने तय किया. विनोबाजी से भेंट होते ही गुरुजी को मानो इच्छा-प्राप्ति हो गई. दोनों में प्रगाढ प्रेम-सम्बन्ध हुआ. विनोबाजी के उन्होंने सब प्रवचन गुरुजी ने लेखबद्ध कर लिये. आज जो 'गीता-प्रवचन' की पुस्तक उपलब्ध है. वह गुरुजी के कारण. धुलिया से हटाकर गुरुजी को नासिक - जेल में भेज दिया गया. जहां उन्हेकं कठिन-से-कठिन सजाएं सहन करनी पडीं. उनके जीवन के ये दिन बडे महत्व के थे. उस समय उन्होंने काफी कविताएं लिखीं. जो आगे चलकर 'पत्री' नाम से प्रकाशित हुईं. उनमें जो चैतन्यदायक शक्ति थी, उससे घबराकर सरकार ने उक्त पुस्तक को जब्त कर लिया. उसी समय सिर्फ चार दिन में जेल के कामों के बाद जो समय बचता था. उसका उपयोग करके उन्होंने 'श्याम ची आई' नाम से अपनी माता के संस्मरण लिखे. इस पुस्तक ने अनेक की आंखें गीली कीं, अनेक को मातृप्रेम का पाठ पढाया. मातृप्रेम का यह महान मंगल ग्रन्थ है. 'धडपडणारी मुले' (प्रयत्नशील नौजवान) नाम की लगभग हजार पन्नों की पुस्तक भी गुरुजी ने वहीं लिखी. और भी काफी साहित्य का सृजन किया.

१९३२ के आंदोलन में महाराष्ट्र को गुरुजी की तेजस्विता का दर्शन हुआ. लेकिन आंदोलन के बाद गुरुजी पूना में अज्ञात रूप से रहने लगे. वहां कुछ गरीब विद्यार्थियों की रसोई करते, बर्तन मांजते, कपडे धोते. इसके बाद जो समय बचता उसमें लिख-पढ़ लेते. इसी बीच गुरुजी का ध्यान मराठी भाषा के 'ओवी (मराठी दोहे)' साहित्य के संकलन की तरफ गया. करीब दो हजार ओवियों को उन्होंने इकट्ठा किया और दो खण्डो में 'स्त्री-जीवन' के नाम से प्रकाशित किया. गुरुजी की यह भी एक बडी भारी देन है.

१९३६ में महाराष्ट्र में हुए कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन को गुरुजी ने रात-दिन काम में जुटकर सफल बनाया. उन्होंने विद्यार्थी, मजदूर तथा किसानों में काम किया. 'कांग्रेस' नाम की साप्ताहिक पत्रिका भी चलाई. महाराष्ट्र में कांग्रेस के एक लाख सदस्य हों, इसलिए २१ दिन का अनशन किया.

१९३६ में दूसरा महायुद्ध शुरु हुआ. गुरुजी को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया. १९४२ में छूटे ही थे कि आंदोलन शुरु हुआ. गुरुजी ने कुछ अर्से तक भूमिगत रहकर काफी काम किया. आखिर एक दिन गिरफ्तार कर लिये गए. १९४५ में रिहा होने पर १९४२ के आंदोलन की गाथा सुनाते हुए पूरे महाराष्ट्र में घुसे. आज़ादी की आहट लोगों ने पाई. आज़ादी तो आ रही है. लेकिन हमारे जीवन तो जैसे-के-तैसे ही हैं. इस पर विनोबा ने किसी कार्यकर्ता के पास अपनी वेदना प्रकट की. गुरुजी ने सुनी तो अस्वस्थ हो गये. पंढरपुर का मंदिर हरिजनों के लिए न खुले तो अनशन करने की बात थी. उन्होंने कहा, 'अगर हमारे जीने से कुछ नहीं होगा तो हमें अपने जीवन की आहुति देकर काम पूरा करना होगा' पुजारियों ने लोकमत को स्वीकार करने से इन्कार किया. गुरुजी का अनशन शुरू हुआ. ग्यारह दिन के बाद पुजारी झुक गये. मन्दिर खुल गया. दिल्ली की एक प्रार्थना-सभा में गांधीजी ने कहा, 'पंढरपुर का पुराना और मशहूर मंन्दिर ठीक उन्हीं शर्तो पर हरिजनों के लिए खोल दिया गया है जैसे कि दूसरे हिन्दुओं के लिए. इसका खास श्रेय साने गुरुजी को है, जिन्होंने उसे हरिजनों के लिए हमेशा के वास्ते खुलने के मकसद से आमरण उपवास शुरु किया था.' गुरुजी की यह हरिजन-यात्रा इतिहास में अभूतपूर्व कही जायगी. नागपुर से लेकर गोवा तक ऐसी कोई पंचगोशी नहीं रही थी, जहां साने गुरुजी ने मन्दिर-प्रवेश का संदेश न सुनाया हो.

इतने में गांधीजी की हत्या हुई. गुरुजी को बहुत सदमा पहुंचा. गांधीजी की हत्या का उत्तरदायी एक महाराष्ट्रीय है. जब यह बात उन्होंने सुनी तो बहुत दुःखित हुए और इस प्रायश्चित करने के लिए २१ दिन का अनशन किया. इसी अर्से में महाराष्ट्र में जातीयता का जहर फैला बहुत लूटमार तथा झगडे हुए. गुरुजी ने फिरकापरस्ती के खिलाफ महाराष्ट्र में एक आंदोलन चलाया. १५ अगस्त १९४९ के दिन गुरुजी ने 'साधना' नाम का एक साप्ताहिक पत्र शुरू किया.

विनोबा और गुरुजी का सम्बन्ध बहुत गहरा था. गुरुजी अस्वस्थ थे. देश की मौजूदा हालत देखकर उन्हें बहुत व्याकुलता थी. देश को ठीक रास्ते पर लाने के लिए जी-जीन से कोशिश तो करते थे, लेकिन स्थिति ज्यों-की-त्यों बनी. तब विवश होकर गुरुजी ने आत्म-समर्पण का मार्ग अपनाया और अपने हाथों अपनी जीवन-ज्योति ११ जून १९५० के दिन बुझा डाली.

चिंतन भारती - १

घटते गांव से गहराता खाद्य संकट

- रिचर्ड महापात्र

तेजी से बढते शहरीकरण की वजह से भारत की खाद्य सुरक्षा संकट में पड गई है. भारत की जनगणना २०११ के अनुसार देश के ६४० जिलों में से अब मात्र १०० जिले ऐसे बचे हैं, जिनमें ग्रामीण जनसंख्या अधिक है. शहरीकरण जहां खेती की जमीनों को लील रहा है. वहीं दूसरी और बढती जनसंख्या से खाद्य पदार्थों की मांग भी बढती जा रही है. साथ ही शहरी उपभोक्ताओं की खाद्य आवश्यकताओं की प्राथमिकता भी अलग है. अफसोस इस बात का है कि हमारे राजनीतिक विमर्श में इस बिंदु की अनदेखी की जा रही है.

भारत में ग्रामीण शहरी पर चर्चा आम बात है. यदि अर्थव्यवस्था के हिसाब से बात करें तो यह विभाजन राजनीतिज्ञों को अपने-अपने तर्क तैयार करने में मददगार सिद्ध होता है. पांच राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव की घोषणा होते ही अनपेक्षित रूप से ग्रामीण शहरी विभाजन नामक इस प्रक्रिया में अखिरी दाव ने अपनी पवित्रता खो दी है. सफल घरेलू उत्पाद सबसे ताकतवर राजनीतिक तर्क के रूप में उभरा है. बहुत जोर शोर से यह तर्क दिया जा रहा है कि ग्रामीण मतदाताओं की आकांक्षाएं भी शहरी मतदाताओं जैसी ही हैं. इससे ग्रामीण बनाम शहरी बहस ही पटरी से उतर गई है. राजनीतिक बहस इशारा कर रही है कि आर्थिक वृद्धि की अंतिम राजनीतिक पहल होगी.

सन् २०११ की जनगणना से सामने आया है कि जिस तेजी से भारत में शहरीकरण हो रहा है वह देश के इतिहास में सबसे तीव्र है. व्यापक ग्रामीण आकांक्षाओं की दिशा बदली है और वे शहरी मध्य वर्ग जैसी प्रतीत होने लगी है. भारत की जनगणना के अनुसार भारत में किसानों के बनिस्बत खेतिहर मजदूरों की संख्या अधिक है. यह सबकुछ इस तथ्य के बावजूद है कि परिचालन या खेती योग्य भूमि में तो वृद्धि हुई है लेकिन इसी के समानांतर उत्पादन में नकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है. इसी तरह की प्रवृत्ति आर्थिक रूप से कमजोर अनुसूचित जाति एवं जनजाति समूहों में भी देखी गई है. तो ऐसे

में राजनीतिज्ञ ऐतिहासिक ग्रामीण-शहरी विभाजन के नाम पर मत क्यों मांग रहे हैं. इसके बजाय देखें तो सरकारी दस्तावेजों के मद्देनजर राजनीतिज्ञों को बिना किसी झिझक के दोनों समूहों के बीच की खाई को पाटने के लिए शहरीकरण को प्रोत्साहित करना चाहिए. यही वह बिंदु है जहां से अब गलती साफ नजर आने लगती है.

इस बात में कोई शक नही है कि भारत परिवर्तन काल में है, लेकिन इसके बावजूद इसका शहरीकरण का सफर पूरा होने में अभी काफी वक्त लगेगा. इस संधिकाल को लेकर काफी सारे सवाल सामने आ रहे हैं. लेकिन इसका एक मूलभूत और शहरी एवं ग्रामीण दोनों के लिए समाज विध्वसंक परिणाम यह है कि तेजी से हो रहा शहरीकरण किस प्रकार भारत के खाद्य उत्पादन को प्रभावित करेगा. इस प्रक्रिया से खाद्य उत्पादन के लिए प्रयोग में आनेवाली भूमि बडी मात्रा में शहरी इस्तेमाल की भेंट चढ जाएगी. ठीक इसी समय शहरीकरण की वजह से खाद्य पदार्थों खासकर दूध एवं सब्जी जैसे अधिक कीमत वाले खाद्य पदार्थों की मांग में काफी वृद्धि दर्ज की गई है. विवाद एकदम सामान्य है, हमें खाद्यान्न उत्पादन हेतु अनुपातिक मात्रा में भूमि चाहिए. यह परिवर्तन किस प्रकार किसानों को प्रभावित करेगा यह दूसरे शब्दों में कहें तो ऐसे ग्रामीण क्षेत्र जो एक समय मुख्यतया बडी मात्रा में कृषि उत्पादन करते थे उन्हें प्रभावित करेगा ? क्या इस परिवर्तन के काई सकारात्मक प्रभाव भी हैं?

यह सबकुछ किसी क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति पर निर्भर करता है. सबसे पहले देखते है कि किस प्रकार शहरीकरण, ग्रामीण क्षेत्र जो कि खाद्य उत्पादन का मुख्य क्षेत्र है को प्रभावित करता है. भारत में अधिक ग्रामीण जनसंख्या वाले ५० शीर्ष जिले अधिकांशतः भारत के पूर्वी हिस्सों एवं आंशिक तौर पर उत्तरप्रदेश और बिहार में स्थित हैं. इनमें से दो तिहाई में अति शहरीकरण हो रहा है. इन जिलों में पारंपारिक तौर पर स्थानीय फसलें जैसे मोटे अनाज का भोजन में उपयोग होता रहा है, लेकिन शहर की आबादी बढने से इनकी खान-+पान की आदतों में भी परिवर्तन आया. अब यहां सब्जियों, दूध एवं पोल्ट्री उत्पादों की मांग बढ गई है. फसल उत्पादन चक्र में परिवर्तन कर किसानों का एक वर्ग लाभान्वित भी हुआ है. लेकिन फसल चक्र में हुए परिवर्तन के

स्थानीय खाद्य उपलब्धता पर नकारात्मक प्रभाव पड रहे है. यह बात उभर कर आ रही है कि मुख्य शहरी केंद्रों के पिछवाडे आनेवाले ग्रामीण जिलों के फसल चक्र में आधारभूत परिवर्तन आया है. वहां किसानों की एक ऐसी पीढी तैयार हो गई है जिसने पारंपरिक फसलों से नाता तोड लिया है ओर अब ये खाद्यान्नों के उत्पादक न होकर उसके खरीददार बन गए हैं. भोजन का अधिकार अभियान के अनेक कार्यकर्ताओं ने इंगित किया है कि आलांकि भोजन तो उपलब्ध है कि पोषण अनुरक्षा पैदा हो गई है.

ध्यान देने योग्य बात है बहुत तेजी से शहरीकरण की गिरफ्त में आते ये अधिकांतश ग्रामीण जिले अत्यंत कुपोषित भी हैं. तेजी से शहरीकृत होते ये अधिकांश जिले भारत के वर्षा पोषित क्षेत्रों में हैं. यही वो क्षेत्र हैं जिन्हें भारत की खाद्य उत्पादन सुरक्षा हेतु चिन्हित किया गया है क्योंकि सिंचित क्षेत्र कमोवेश उत्पादन के शीर्ष पर पहुंच चुके हैं. इन जिलों में अब खाद्य उत्पादन में कमी का अर्थ है भारत की भविष्य की खाद्य उत्पादन रणनीति भी दांव पर है.

वर्तमान राजनीति विमर्श में इस खतरे की गूंज बहुत कम सुनाई दे रही है. यह इसलिए अत्यंत विरोधाभास प्रातीत होता है क्योंकि भारत के दो तिहाई संसदीय क्षेत्र ग्रामीण हैं और ये हर हालत में इस परिवर्तन से गुजर रहे हैं. इस विद्यमान स्थिति को लेकर पहली बात यह कि या तो राजनीतिज्ञ आर्थिक वृद्धि को ग्रामीण मतदाताओं के गले उतारने की बात पर पहले ही एकमत हो चुके हैं. या वे इस परिवर्तन के समय में उनकी मदद कर पाने में असहायता महसूस कर रहे हैं. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम पर संसद में हुई बहस के दौरान एक भी सदस्य ऐसा नहीं था, जिसने भारत में खाद्य सुरक्षा पर आसन्न खतरे में हुई बहस के दौरान एक भी सदस्य ऐसा नहीं देखा कि यह शहरीकरण का परिणाम है. देश में केवल १०० जिले ऐसे बचे हैं, जिनमें शहरी के बजाए ग्रामीण जनसंख्या अधिक है. ये अब कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के जीवित फाजिल्स की तरह हैं. इस बात की पूरी संभावना है कि यही वे जिले हैं, जहां से भारत को भोजन मिल पाएगा. यह देखना रुचिकर होगा कि ग्रामीण शहरी विभाजन पर वर्तमान में पर चल रही राजनीतिक बहस को मतदाता किस तरह से देखते हैं.

समाचार भारती-१

आंतर भारती (गुजरात) कार्यविवरण

दिनांक : १०-०५-२०१३ से ०९-०५-२०१४

आंतर भारती की १० मई २०१३ की सभामें गोवा जाने का मौका मिला, अगले दिन सुहासजीकी मेहमान नवाजी का आनंद लिया, इनके घरका परिसर प्राकृतिक वातावरणसे भरा था परिवारमें सब को अच्छा लगा. दूसरे दिन आंतर भारती विश्वस्त मंडल, राष्ट्रीय कार्य समिति के सदस्य गण एवम आजीवन सदस्य गण की बैठकमें गतवर्ष का कार्यविवरण, आयव्यय की चर्चा हुई बादमें पदाधिकारियों का सर्वसंमति से निर्वाचन हुआ. दूसरी बैठकमें पंढरपुर सत्याग्रह एवम पूज्य यदुनाथ थत्ते स्मृति समारंभ के कार्यक्रम अच्छे रहे. रातको सांस्कृतिक कार्यक्रममें देश भक्ति के गीत-नृत्य, गोवा के प्रसिद्ध नृत्य देखने को मिला, तीसरे दिन गोवा दर्शन में वहां के प्रसिद्ध बीच चर्च और मंदिर देखे, अच्छा रहा, गोवा की यात्रा रोमांचक रही.

चाह गोष्टी - विश्वग्राम ट्रस्ट युवा चेतना जगाने का काम कई वर्षों से कर रहा है. विश्वग्राम के मित्रो का एक स्नेह संमेलन माउन्ट (राजस्थान) में दिनांक २७-०५-२०१३ से ३०-०५-२०१३ तक स्काउट एन्ड गाइड ग्राउन्ड में हुआ. निवास जंगल के बीच था. भोजन की अच्छी व्यवस्था थी तीन दिन के इस कार्यक्रम में विश्वग्राम के पिछले वर्षो में हुए कामों की चर्चा हुई और भविष्य के कामका आयोजन भी हुआ. शांतिशाला के प्रशिक्षण के लिए हेन्डबुक बनाने की जिम्मेवारी सोपी गई. शिबिर में एक दिन का जंगल भ्रमण का कार्यक्रम सबको अच्छा लगा. तरह तरह की चाय पीने का मजा लूटा. राजस्थान के स्काउट एन्ड गाइड के शिक्षको के साथ तालीम कार्यक्रम चल रहा था, इसमें रात्रि के संस्कार कार्यक्रम में गुजरात ओर राजस्थान की संस्कृतिका परिचय मिला.

सद्भावना पर्व - सन् २००२ के गुजरात दंगों के बाद सद्भावना फोरमकी रचना हुई पिछले पांच सालसे सर्वधर्मों के मित्रों का एक मिलन कैलास गुरुकुल महुवा में पूज्य मोरारीबापू के सानिध्य में मिलता है. इस बार का संमेलन दिनांक ०७-०६-२०१३ से ०९-०६-२०१३ तक महुवा मे मिला. विषय

था ''सद्भावना और नागरिक समाज'' कार्यक्रमसे मार्टीन मेकवान, नगीनदास संघवी, यु.जी.ब्राह्मा, राजेन्द्रसिंह, गणेशदेवी, वर्षा अडालजता और अनिल गुत्ता ने विषय को स्पष्ट किया, प्रश्नोत्तरी भी अच्छी रही, तीसरे दिन भावी कार्यक्रमों का आयोजन हुआ और इस वरससे सद्भावना एवोर्ड प्रदान किए गये. गुजरात कक्षा का एवोर्ड श्री जगदीश शाह (वडोदरा) को और देशकक्षा का एवोर्ड विनय-चारुल को संयुक्त रूपसे दिया गया.

शांतियात्रा - भारत-पाकिस्तान के बीच सद्भावना पूर्ण माहोल के लिए कन्याकुमारी से इस्लामाबाद की साइकिल यात्रा का आयोजन दिल्ली युनिवर्सिटी के मित्रोने किया, यात्रा का नेतृत्व प्रविणसिंह ने किया, यह बारह मित्रों के साथ मुझे अहमदाबाद से पालनपुर तक (दिनांक १७-०७-२०१३ से १९-०७-२०१३) जुडने का मौका मिला मेहसाणा, रतनपुर और पालनपुर में सभायें हुई. यह यात्रा जून २०१३ से कन्याकुमारी से निकली थी, जो १५ अगस्त २०१३ को वाघाबोर्डर पहुचनेवाली थी.

ग्रामशिल्पी राधाकिशन की मुलाकात - केदारघाटी बाढ पीड़ितों के सहाय कार्यक्रममे ग्राम-शिल्पी राधाकिशन का हमारे उमेशभाई श्रीवास्तव से परिचय हुआ, इनके प्रेमाग्रह के वस राटोटी जाना हुआ. राटोटी आग्रा से ५२ किलोमीटर दूरी पर कानपुर रोड पर स्थित है. हमारे मित्र करीब चार चाल से युवा चेतना, बालसंस्कार पर्यावरण और आरोग्य को कन्द्र में रखे हुए लोक सेवा का काम कर रहे हैं. उनके पास चार बीघा जमीन है, जिसमें फलों के पेड लगाने का कार्यक्रम था. हमने बच्चों के कार्यक्रम तथा ग्रामजनो की मुलाकात की करीब १०० पेड, लगाए ये मुलाकातमें मे ओर मेरी धरमपत्नी इलाबहन, श्री उमेशभाई तथा श्री अब्दुलभाई पधारे थे. सबको मजा आया. नया विस्तार देखने को मिला, ये मुलाकात हमारी अगस्त महिने में हुई थी.

शांतिसेवा शिबिर : उत्तर गुजरात की १०, उत्तरबुनियादी शालाओं के १०० छात्रों का एक शांति सेना मेहसाणा जिल्ले के कडी तहसील के इन्द्राड गाँव में शिविर चला मैने २७-२८ ऑक्टोबर को भाग लिया, बच्चोने ओरीगामी, ग्रीटींगकार्ड सीखा, बिना साधनके खेल खेले रात के संस्कार कार्यक्रममें गुजरात की लोक संस्कृति का परिचय हुआ, बच्चों को प्रवचन के बजाय, प्रवृत्तिमें ज्यादा मजा आया.

मेरी केरलयात्रा : दिनांक २७-१२-२०१३ से दिनांक ०३-०१-२०१४ तक केरल जाने का मौका मिला मेरी भान्जी तारल की कोचीन में शादी थी. २८ शाम को हम राजी चेरीन जेकब के मेहमान बने परस्पर परिचय लिया, केरल का स्वादिष्ट भोजन लिया, राज होटल पधारे, दूसरे दिन पैरावम चर्च में शादी संपन्न हुई, तीसरे दिन बोटहाउसमें यात्री की, दिनांक ३१-१२-२०१३ को क्रिस्मस मनाया ऐसे दो संस्कृति का परिचय हुआ, केरल का प्राकृतिक सौंदर्य, यात्राका मजा लिया.

जीवनशाला : विश्वग्राम के मित्र दो महीने में एक बार जीवनशाला के रूपमें मिलते है. इसबार की जीवनशाला, प्राथमिकशाला वणागला, तहसील-उझा, जिल्ला मेहसाने में दिनांक ०४, ०५, जनवरी २०१४ को मिली जिसमें गांधी की बाते तरुणों में, युवा संवाद, युवाशिविर, फिल्म दर्शन और संवाद सभाका आयोजन हुआ जिसमें रोहित शुक्लने ''अपनी सामाजिक निस्बत'' पर अपने विचार प्रस्तुत किए, जीवनशाला में ये सब कार्यक्रम सातदिन तक चले.

युवाचेतना शिविर : गांधीआश्रम झिलीया की बी.आर.एस.कॉलेज झिलीया के एन.एस.एस. के १०० छात्रोंने हिस्सा लिया, ये शिबिर दि. ०५-०१-२०१४ से दि. १०-०१-२०१४ तक चला मैने दो दिन हिस्सा लिया, पहले दिन मेरा वार्तालाप था की, ''जीवन में शिबिर का महत्व'' पर मैने अपने विचार प्रकट किए. समूह गान, सर्जनात्मक प्रवृत्तियाँ, बिना साधनके खेलमें युवको को बहुत मजा आया.

नईभोजन प्रथा : (अंबाजी) स्वर्गारोहण संस्था और बी.वी.चौहाण के सहयोग से नई भोजन प्रथा का शिबिर अंबाजीमें चला जिसमें दि. २४-०१-२०१४ से २६-०१-२०१४ को भाग लिया जिसमें सुबह जागने के बाद ६ घंटे तक निर्जला उपवास, बादमें फलके रस या भाजी के रस, दोप्रहर को कच्चा खाना और शाम तक जरूरत पडने पर फलहार ओर रात को पकाया हुआ सादा भोजन लेने का उपक्रम था. सुबह और शाम नई भोजन प्रथा के बारे में संवाद और प्रश्नोत्तरी होती थी और शंका का समाधान भी होताा था जिन लोगोंने वे प्रथा अपनाई षथी उनके भी अनुभव सुनने को मिले. आज तीन महीने से मेरा यह उपक्रम चलता है. मेरा ८ किलो वचज कम हो गया और केलेस्ट्रोल की जो समस्या थी वो हल हो गई.

शिक्षणयात्रा : विश्वग्राम और डॉ.द्वारकादास जोशी मेमोरीयल फाउन्डेशन, विसनगर के संयुक्त उपक्रम में दि. २७-०१-२०१४ से ०६-०२-२०१४ तक उत्तर गुजरात के १० शहर अहमदाबाद, कडी, गांधीनगर, मोडासा, हिम्मतनगर, मेहसाणा, उंझा, पाटण, पालनपुर और दरामली शहरोमें बी.एड.कॉलेजों में सभा का आयोजन हुआ विषय था शांतिकी संस्कृतिः शांति, स्नेह और सर्जनात्मकता शिक्षण, विषय पर वार्तालाप, प्रश्नोंत्तरी, पुस्तक प्रदर्शन अच्छे रहे. सभामें १३ वक्ताओने भाग लिया, इस यात्रामें तुला संजय, उमेशषभाई, श्री हर्षदभाई, प्रविणसुथार ने पूरे १० दिन हिस्सा लिया. शिक्षा का यह प्रकल्प सबको अच्छा लगा.

गांधीमेले की मुलाकात : हर साल उत्तरगुजरात में दि. ११-१२ फरवरी गांधीमेले का आयोजन होता है. इस बार का मेला ग्रामभारती अमरापुर, जिल्ला गांधीनगर में आयोजीत किया गया, मेले का विषय था ''दर्शक साहित्यका दर्शन'' जिसमें रघुवीर चौधरी, मनसुख सल्ला और माधव रामानुजने अपने विचार प्रकट किए, करीब एक हजार बच्चोंने हिस्सा लिया, प्रदर्शनी, श्रम, सफाई का कार्यक्रम भी साथमें था, दोपहर के बाद रेती में खेती करने वाले, साबरमती के किसानों की मुलाकात की, अश्वमेले के कारण पानी बंद हो गया था, और खेती चौपट हो गई इनके दुःख दर्द सुनने को मिले.

भूतपूर्व विद्यार्थी संमेलन : ग्रामभारती संस्थामें पिछल ५० सालमें भूतपूर्व विद्यार्थियों का नियमित रूप से संमेलन मिलता है. एक भूतपूर्व विद्यार्थी का सन्मान होता है. इस बार मेरे विद्यार्थी श्री हरगोवन पटेल जो वास्मो संस्था में पीने के पानी का काम करता है, उसका सम्मान था गुजरात के भूतपूर्व सचिव पी.के.लहेरी के हाथो सम्मान किया गया. समाज की विपरीत परिस्थितिओं में कैसे काम किया इसके बारे में भाई हरगोवनने अपने विचार व्यक्त किए, सारी सफलता का यश अपने माता-पिता, गुरुजनों और मित्रों को दिया.

शिक्षणपर्व : गुजरात केलवणी परिषद और कैलाशगुरुकुल महुवा के संयुक्त उपक्रममे दि. ०१-०३-२०१४ से ०३-०३-२०१४ कि शिक्षण पर्व महुवा में मिला, गुजरात की ८५ संस्थाओं के २५४ सदस्योंने संम्मेलन में हिस्सा लिया, मेहमानो के वार्तालाप समूह चर्चा वगैरह कार्यक्रम अच्छे रहे, श्री डॉ.रवीन्द्र दवे, श्री योगेन्द्रभट्ट वगैरे मेहमानोने अपने विचार व्यक्त किए, ''अकुपार''

नाटक प्रदर्शित किया गया. शिबिरमें नया जोश मिला, अच्छे संकल्प किए.

सर्जन शिबिर (सिद्धपुर) : १० वीं श्रेणी के परीक्षार्थी जब बोर्ड की एक्जाम में जाते हैं तब शिक्षकों की कमी के कारण स्कूलो में अवकाश रहता है. इसी लिए बच्चों को कुछ नया शिखने को मिले इसीलिए योगान्जली आश्रम सिद्धपुर और आंतर भारती वडोदरा ने दि. १३-०३-२०१४ से दि १५-०३-२०१४ सर्जन शिबिर का आयोजन किया जिसमें ओरीगामी, ओडल कार्ड, ब्लोट पेंन्टींग चित्रकला जैसी प्रवृत्तियां की गई. पुस्तक परिचय, बिना साधन के खेल, समूहगान कार्यक्रम अच्छे रहे अंतिम दिन श्री उमेशभाई और महमदखान पठाणने व्यवसायी मार्गदर्शन के बारे में वार्तालाप किया बच्चोने प्रश्न भी पूछे और प्रदर्शनी भी लगाई गई. पूरे शिबिर का संचालन श्री हर्षदभाईने किया.

सर्वजन शिविर (डाकोर) : राष्ट्रीय केलवणी मंडल और आंतरभारती गुजरात के सहयोग से दो दिन का सर्जन शिबिर उत्तर बुनियादी विद्यालय डकोर में संपन्न हुआ ९ वीं और ११ वीं के ६० बच्चोंने हिस्सा लिया, ये शिबिर दि. १९-०३-२०१४ से २०-०३-२०१४ तक दो दिन चला जिसमें राष्ट्रीय एकता के समूह गाने सीखे, ग्रीटिंग, मिट्टी के खिलोने, झुम्मर वगैरह बनाये, इसकी प्रदर्शनी भी लगाई गई और बच्चों को बिना साधन के खेल खेलने मे बहुत मजा आया. बच्चों का आग्रह था के ये शिबिर दो दिन और चले पर मैं वादा करके आया कि अगले साल भी ऐसा शिबिर करेंगे. आचार्य श्री जयदीपसिंह और उनके शिक्षकों का सहयोग अच्छा रहा.

सद्भावना शिविर - कम्नुनीटी डेवलोपमेन्ट सोसायटी, आणंद और सद्भावना फोरम के संयुक्त उपक्रम में सद्भावना शिविर का दि. २७-०३-२०१४ से दि. ३०-०३-२०१४ ग्लेन व्यूह संस्थामें माउन्ट आबू में २० बहनो का शिविर चला जिसमें हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई समाज की बहने थी, शिबिर संचालन फादर विलियम, तुला संजय, डंकेश भारती, श्री हर्षदभाई, मनोज मेकवान और हसमुखभाई ने किया, सौहार्दपूर्ण संबंध कैसे बनाय जाए इस बारे में खास चर्चा हुई. पर्वातारोहण संस्था की बहन श्री चौला बहनने अपने हिमालय भ्रमणके अनुभव कहे. बहनो के अनुभव सुनने में बहुत मजा आया, सर्जनात्मक प्रवृत्तिया भी की गई, एक दिन ट्रेकिंग का भी कार्यक्रम रखा गया.

श्रम संस्कार शिविर : विश्वग्राम के १७ बच्चों का श्रम संस्कार शिविर दि.

२०-०४-२०१४ से दि. २५-०४-२०१४, ६ दिन चला जिसमें हररोज ४ घंटा श्रमदान होता था लगाए गये पेडों को पानी की व्यवस्था के लिए क्यारी बनाई गई, सब्जी प्लोटमें नए बीज बोये गए और पानी दिया गया दोपहर के समय में पग लुछणीये बनाये गये.

विश्वग्राम का कार्य : विश्वग्राम की कॅम्प साइट पर लगाए गये पेढों की देखभाल सब्जी प्लोट में मार्गदर्शन के लिए महीने में ६-७ दिन जाने का कार्यक्रम रहता है, बच्चों को सर्जनात्मक प्रवृत्तिया सिखाना वगैरह काम रहता है. इस बार केदार घाटी से आये मित्रों का संस्था दर्शन कार्यक्रम तथा कॉम्प्युटर तालीम और मोबाईल रीपेरींग के लिए आये हुए मित्रों को मार्गदर्शन देने का काम चलता रहा. सर्वोदय के मित्र जो तीसरे रविवार को विसनगर में मिलते है, इसमें करीब ८ सभा में जाना हुआ, जहां गांधी-विनोबा के विचारपर चर्चा और किए हुए काम का विवरण वगैरे प्रवृत्तिमें हिस्सा लेना होात है.

आसाम की कोकिला विकास संस्थाकी बहने ''सेवा'' संस्थामें तालीम के लिए जून से सितम्बर तक रही उनको हर रविवार सहायता और मार्गदशैन हेतु मिलने को जाता था था. इस तरह समाज से जुडकर प्रशिक्षण, संपर्क, वार्तालाप का मौका मिला रहा.

अगले समयमें जून ६, ७, ८ सद्भावना संमेलन महुवा में होने जा रहा हैं, आसाम में फिरसे हिंसा के कारण स्कूलों का साधन प्रदान करने का कार्यक्रम जो मई में होनेवाला था सो अब जुलाई में करना होगा. मेरा साल-भर शिविर वगैरह कार्यक्रमो में जाना होता है. आंतर भारती के उद्देशों का प्रसार करना मेरा कार्य बन गया है. काम करने का आनंद भी मिलता है.

धन्यवाद

हर्षदभाई रावल

मो. ८१४१९७३३४१

अब अपनी रचनाएँ इस पते पर भेजें
डा.सी.जयशंकर बाबु
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग पांडीच्चेरी विश्वविद्यालय, कालापेठ, पुद्दुच्चेरी - ६०५०१४
चलध्वनि संपर्क : ०९८४३५०८५०६
ईमेल-editorbabuji@gmail.com / वेबसाईट-www.yugmanas.blogspot.com

समाचार भारती-२

इन्दौर में पंढरपुर सत्याग्रह एवं यदुनाथ जी थत्ते स्मृति समारोह का आयोजन

प्रतिवर्ष देश के विभिन्न अंचलों में आंतर भारती, पंढरपुर सत्याग्रह स्मृति दिवस एवं यदुनाथ जी थत्ते स्मृति समारोह मनाती है. उसी तारतम्य में इस वर्ष मध्यप्रदेश, इन्दौर में पंढरपुर सत्याग्रह एवं यदुनाथ जी थत्ते स्मृति समारोह १० मई २०१४ को आयोजित किया गया.

सर्वप्रथम सुबह ११ बजे से २ बजे तक आंतर भारती की राष्ट्रीय कार्यकारिणी व विश्वस्तों की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें आंतर भारती के महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, गोवा, पांडीचेरी आदि के प्रतिनिधि उपस्थित थे. सभी प्रतिभागियों ने अपने अपने क्षेत्र में आंतर भारती के तहत किये गए अपने अपने कार्यो का ब्योरा दिया. आंतर भारती के राष्ट्रीय संगठक श्री गिरीश वालिम्बे जी ने बताया कि आंतर भारती का नया केन्द्र चिपलुण में भी बना दिया गया है. श्री अमर हबीब ने अपने शहर के विभिन्न प्रांतों के नागरिकों का सम्मान किया. डॉ. तपन भट्टाचार्य ने आंतर भारती के बेनर तले हुई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी. आंतर भारती राष्ट्रीय बाल आनन्द महोत्सव के बारे में बताया कि हर साल करीब ४५०० बच्चे तीन दिवस तक बाल आनन्द महोत्सव का हिस्सा बनते हैं और खूब आनन्द उठाते हैं. डॉ. तपन भट्टाचार्य ने आंतर भारती मध्यप्रदेश द्वारा प्रकाशित चार पुस्तकों के बारे में जानकारी दी एवं सभा में उपस्थित सभी आंतर भारती सदस्यों के लिये चारों पुस्तकों की प्रति उपलब्ध करवा दी. डॉ भट्टाचार्य ने इस पर भी चर्चा की कि ज्यादा से ज्यादा युवाओं को आंतर भारती से जोडा जाए. प्रिंस अभिषेक अज्ञानी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वे भ्रष्टाचार के खिलाफ भोपाल में लड रहे हैं. नवम्बर माह में पंजाब के तरण तारण जिले में आंतर भारती का एक शिविर लगाने की योजना बन रही है. वे जम्मू कश्मीर में भी शिविर लगाने की योजना बना रहे हैं. डॉ सी.जयशंकर बाबू ने अपने उद्बोधन में कहा कि पिछले ढाई वर्षो से आंतर भारती का दायित्व संभाल रहे हैं. उनके अनुसार आंतर भारती की एक निर्देशिका होना चाहिये ताकि हर किसी से हर किसी की बातचीत हो पाएं. ज्यादा से ज्यादा वरिष्ठ कार्यकर्ता उसमें मौजूद हों ताकि दूसरे नये लोग उनका मार्गदर्शन ले सकें . आंतर भारती के बेनर तले जो भी प्रकाशन हो रहे हैं उनको पी डी एफ फार्मेट में आंतर भारती के मुख्यालय पर मेल किया जावे ताकि उन सभी प्रकाशनों को ई पुस्तक की तरह आंतर भारती की वेबसाईट पर डाल

दिया जावे एवं सभी लोग इस जानकारी का लाभ उठा सके. सी जयशंकर बाबू ने कहा कि इस कार्यक्रम में ज्यादा से ज्यादा युवाओं को जोडा जावे. डॉ जयशंकर बाबू ने कहा कि साने गुरूजी की लगभग १४० रचनाएं हैं साने गुरूजी की यह इच्छा थी कि इन रचनाओं का हर भाषा में अनुवाद हो तथा हर भाषा के व्यक्ति को यह रचनाए उपलब्ध हो सकें एवं गीतों के माध्यम से जनजागृति हो सके. अभी मराठी से हिन्दी में अनुवाद करने वाले व्यक्ति की बहुत आवश्यकता है जो साने गुरूजी की मराठी रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद कर सके फिर उसे हर भाषा में अनुवादित कर प्रकाशित किया जावे. अंत में आंतर भारती के राष्ट्रीय महासचिव श्री सदाविजय आर्य जी ने आय व्यय का ब्योरा दिया. उनका कहना था कि जल्दी से जल्दी आंतर भारती के फंड को रू दस लाख तक लाना चाहता हूँ ताकि बाद में भी आंतर भारती निर्विध्न चलती रहे. अगर आज हर एक सदस्य १०-१० आजीवन सदस्य बनाते हैं तो यह फंड जल्दी ही पूरा हो सकता है. उनका कहना था कि अभी आंतर भारती का महाराष्ट्र में ही जोर ज्यादा हैं अत: आंतर भारती केा इतर प्रांत में भी लीड लेनी होगी. वैसे आदरणीय सुब्बाराव जी के सहयोग से अलग अलग प्रांत में रक्त सहयोग शिविर, शिक्षक प्रेरणा प्रबोधन शिविर, बाल आनन्द महोत्सव आदि के आयोजन होते रहते हैं. उन्होंने कहा कि यदुनाथ जी कहते थे बेनर के लिये काम न करों काम लोगों के लिये करो आत्मसंतुष्टि के लिये करो. आंतर भारती द्वारा साने गुरूजी के विचारों को जगह जगह पहुंचाने का प्रयास किया जावे.

प्रसिद्ध गांधीवादी वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता श्री सुब्बाराव जी ने अपने उद्बोधन की शुरूआत एक गीत से की. उन्होंने उपस्थित प्रतिभागियों से पूछा कि क्या दुनिया में आज प्यार बढा है? देश में एकता बढ रही है? क्या चारीत्रिक सुधार हो रहा है? लोगों के मन में बहुत अशांति है. दूसरे महायुद्ध के बाद लडाई नहीं हो रही इसका मतलब देश में शाति है ऐसा नहीं. लडाई इंसान के दिमाग में पैदा होती है. लडाई कुरूक्षेत्र में नहीं दुर्योधन के दिमाग में थी, लंका में नहीं रावण के दिमाग में थी, यूरोप में नहीं हिटलर के दिमाग में थी. आज हर छोटे बच्चे के दिमाग में यह बात आनी चाहिये कि मैं भारत का बच्चा हूँ. अमेरिका के एक स्वामी ने भारतीय परिवार के लोगो को बुलाकर एक कागज दिया और कहा कि मेरे सवाल का जवाब इस कागज में लिखना कि तुम्हारी उम्र के बच्चे अमेरिकन बच्चे तो बिगड जाते हैं पर तुम भारतीय बच्चे तो यहां मेरिट में आते हो, तुम क्यों नहीं बिगडते. इस बात का लगभग ७० प्रतिशत बच्चों ने जवाब दिया आत्माभिमान.

बैठक के अंत में सभी उपस्थित प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया गया.

शाम ५ बजे से पंढरपुर सत्याग्रह स्मृति दिवस एवं यदुनाथ थत्ते स्मृति समारोह का आयोजन किया गया. उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत श्री सदाविजय आर्य, डॉ. तपन भट्टाचार्य, बेला जैन, श्री अमर हबीब ने किया.

श्री मुकुन्द कुलकर्णी ने अपने उद्बोधन में यदुनाथ जी के कई छोटे छोटे संस्मरण सुनाए. उन्होंने कहा कि यदुनाथ जी एक अक्खड पत्रकार थे सच्चाई लिखने से कभी नहीं डरते थे. आज के युग में धरना, क्रांति, किसी व्यक्ति का चरित्रहनन बस यही समाचार पत्रों का सबब बन कर रह गया है. यदुनाथ जी हमेशा व्याख्यान करके उस पर चर्चा करते थे एवं उसमें से निकलने वाले मुद्दों को उठाने की सुलझाने की कोशिश करते थे. यदुनाथ जी बहुत ही सद्चरित्र व्यक्ति थे. सरलता एंव सादगी उनके चरित्र में रची बसी थी. १९७१ में एक व्याख्यान हेतु वे इन्दौर आए. भाषण के बाद वे मेरे ढाई कमरे के घर पर आए और मुझसे कहने लगे अगर मैं यहा रहूँ तो तुम्हे तो कोई तकलीफ नहीं. मैंने कहा कि मेरा तो छोटा सा घर है पर अगर आपको सुविधाजनक लगता है तो आप रह सकते हैं. फिर वे मेरे घर पर ही रूके. यदुनाथ जी एक पारदर्शी व्यक्ति के मालिक, मितभाषी कभी किसीकी पीठ पीछे निंदा न करने वाले पूर्ण रूप से निराभिमानी व्यक्तित्व थे. यदुनाथ जी कहते थे कोई भी व्यक्ति निर्दोष नहीं होता लेकिन संगठन में सभी को जगह देना चाहिये. हमें प्रयास करना चाहिये कि उसे अपना मित्र बनाएं और उसके दोष से संगठन को कोई तकलीफ न हो इस बात का ध्यान रखना चाहिये. यदुनाथ जी का जीवन प्रेरणास्पद था. उन्होंने मुझे सांचे में ढाला. उनके कमरे का केाई भी ऐसा कोना खाली नहीं था जहां पर किताबे न रखी हों. उनके हजारो नाटक व सैकडों किताबें प्रकाशित हुई हैं. वे हमेशा कहते थे कि हमारे पास सरप्लस एनर्जी है उसे देश के लिये लगाएं. यदुनाथ जी की चिठठी आई कि ग्राम नगर सहकार योजना साहस यात्रा प्रकल्प में इन्दौर के कुछ लोगों को भेजो. लगभग आठ लोग वहां गए. गहरे समुद्र में जाकर मछली मारना रात दो दो बजे वापस सागर तट पर आना इस तरह से बहुत ही अच्छे अनुभव सागर यात्रा के दौरान प्राप्त हुए. ४०० लडके लडकियों का केम्प लगाया वहां बिजली नहीं थी. आपसी परस्पर सहयोग से सामुहिकता के साथ काम करने की समझ बढी. यदुनाथ जी इन्दौर में आठ दिन आते थे. वे पोस्टकार्ड पर उत्तर लिखते रहते थे. लगभग २५-३० पत्र उनके आते थे. मुकुन्द जी ने दुख व्यक्त किया कि आज हमारे पास बेहतर संसाधन है पर हम अच्छा परफांर्मसं नहीं दे पा रहे हैं. हम सिर्फ अपना काम करने में संतुष्ट हैं. इस क्षेत्र में स्वार्थवाद फैल रहा है. गर्मीयों की छुटटी में शिविर तो लग रहे हैं पर उसे एक कार्यक्रम मानकर छोड दिया जाता है. बच्चों का आत्मविश्वास बढे उनका आत्मविकास हो ऐसा नहीं

है. यदुनाथ जी ने अपनी पत्रिका साधना से इसलिये त्यागपत्र दिया कि दूसरे लोग इस कार्य को करने के लिये तैयार होवे गलतियां तो वे करेंगे पर हमने भी गलतियों से ही सीखा है वे भी गलतियों से ही अच्छा काम करना सीखेंगे. श्री कुलकर्णी ने कहा कि आज इस पुन:स्मरण से फिर से नई उर्जा आ गई है अत: इस समय पूरे जोश के साथ आंतर भारती के कार्यो को आगे बढाना चाहिये.

डॉ. उषा तिवारी ने अपने उद्बोधन में सत्याग्रही साने गुरूजी के बारे में बताया कि सत्य पर आग्रह यानि सत्याग्रह. ऐसा शिक्षक जो स्कूल में बच्चों को पढा रहा था थोडी देर बाद देखा कि वही शिक्षक बच्चों को स्वयं कपडे धोना भी सिखाता है. स्वयं के कार्य स्वयं करो यह सिखाता है ऐसा शिक्षक अब कहां मिलेगा. १९२४ में साने गुरूजी ने अमलनेर हाई स्कूल में कार्य करना शुरू कर दिया. वे अपने प्रयत्नों से गरीबों की दुर्दशा जितनी हो सके कम करना चाहते थे. साने गुरूजी अपने प्रेम, वाणी, अनुशासन, विद्वता और सादगी के कारण छात्रों में प्रिय और आदरणीय हो गए. उन्हें होस्टल का इंचार्ज भी बना दिया गया. अब साने गुरूजी शिक्षक के साथ साथ अभिभावक भी बन गए. उन्होंने अपने छात्रों को दिनचर्या सूर्योदय के पूर्व से शुरू की छात्र अनुशासित और स्वावलंबी बन गए. बच्चे स्वच्छ और स्वस्थ रहने लगे. उन्होंने छात्रों को प्रकृति प्रेम करना सीखाया, उन्हे देश की गरीबी और गुलामी के बारे में बताया. साने गुरूजी को अपनी मॉ से अगाध प्रेम था. वही प्रेम बाद में मातृभूमि के प्रति हो गया. उनकी मॉ कहती थी कि स्त्री पुरूष में कोई भेद नहीं बल्कि पिता बनने से बहुत अधिक कठिन और महत्वपूर्ण है माँ बनना. यह बात साने गुरूजी ने अपने हृदय में बांध ली और अपने हृदय को एक मां के हृदय में ढाल दिया. तभी तो गुरूजी के निधन पर किसी ने कहा था कि गांधीजी के निधन पर हमने अपना पिता खोया था, आज साने गुरूजी के निधन पर हमने अपनी माँ को खो दिया है. साने गुरूजी एक प्रश्न का उत्तर सोच रहे थे कि आखिर मेरी अनपढ माँ ने प्रेम का सेवा का पाठ कहां से पढा? सोचते सोचते उन्हे जवाब मिला कि लोकगीतों से . तभी से गांव गांव घूम कर महिलाओं के साथ काम करने उन्होंने लगभग २००० गीत एकत्रित कर लिये. उन्हें प्रकाशित किया जो लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय भी हुए. पंढरपुर का मंदिर जो गांधी, विनोबा नहीं खुलवा सके उसे साने गुरूजी ने अपने अनशन के बल पर लोगों को प्रभावित कर खुलवा दिया.

साने गुरूजी कहते थे कि जो कर्म स्वार्थ से प्रेरित है वे जोडने का काम नहीं कर सकते. जिन कामों से विश्व की सद्शक्ति का अविष्कार होता है वही समानुयोग कर सकते हैं. उस समनुयोग शक्ति में अगर हृदय निष्णात हो जाए तो आनन्द ही आनन्द फैलता है और बीमारी की छूत से भी आनन्द की छूत ज्यादा फैलती

है. इस दृष्टि से देखें तो आंतर भारती हृदय विकास का और आनन्द निर्मिति का आंदोलन है.

श्री अमर हबीब ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज का दिन मानो विभिन्न राज्यों में एक अच्छा सिलसिला है. साने गुरूजी ने पंढरपुर में सत्याग्रह किया. महाराष्ट्र में बहुत से मंदिर थे पर पंढरपुर मंदिर चयन करने का कारण मंदिर से जुडी बहुत सी बातें. पंढरपुर का विठोबा सभी का लोकप्रिय है. वो जात नहीं मानता धर्म नहीं मानता. इस मंदिर में हरिजनों का प्रवेश वर्जित था. एक बार एक हरिजन मर गया था. नामदेव ने हरिजन का शव मंगाया, उसे मंदिर में ले जाने से रोक दिया गया और उसे मंदिर की सीढियों के पास दफनाया गया. नामदेव का आंदोलन रूक गया उसी आंदोलन को साने गुरूजी ने आगे बढाया . उनके अनशन करने से सभी के लिये मंदिर के द्वार खुल गए. आज सुप्रीम कोर्ट का यह जजमेंट है कि पहले पुजारियों का इंटरव्यू होगा उसकी जात कोई भी हो अगर पात्रता है तो उसे ही पुजारी बनाया जाएगा. इस तरह से पंढरपुर सत्याग्रह सफल रहा. श्री अमर हबीब ने कहा कि हम लोग गुरूजी और थत्ते जी ने जो कार्य किये उन कार्यो को आगे नहीं बढा पाए क्योंकि हम समारोह में लग जाते हैं. अगर एक समस्या लेकर उस पर जिंदगी लगा दें तो वो कार्य पूर्णत: सफल हो सकता है. मेरी ऐसी संकल्पना है कि मेरा देश विश्व का एक ऐसा देश बने कि आने वाली सरकार का मार्गदर्शक बने.

आंतर भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्द मोहन माथुर जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिटलर एक चुना हुआ व्यक्ति था. तृतीय महायुद्ध क्यों हुआ क्योंकि हिटलर चाहता था. द्वितीय महायुद्ध के समय सहायता से प्राप्त गरम कपडे यूके फ्रांस चले जाते थे जर्मन में नहीं मिलते थे. तब हिटलर ने कहा कि मैं तुम्हारा स्वाभिमान तुम्हे वापस करूंगा. हिटलर ने कहा कि जर्मन कोम की विशेषता है कि समय व स्वाभिमान के लिये एक जर्मन जान भी दे सकता है. वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए माथुर जी ने कहा कि आगे बहुत संकट के दिन भी आ सकते हैं ये देश हिस्सों में बट सकता है उस समय आंतर भारती की बहुत आवश्यकता है. सिर्फ आंतर भारती के लोग ही इसका मुकाबला कर सकते हैं. आज राजनैतिक परिदृश्य में हर आदमी कह रहा है कि हम भ्रष्टाचार का उन्मुलन कर सकते हैं. सरकार सबके लिये होगी या थोडे लोगों के लिये होगी. आज इस बात की जरूरत है कि हम आपस में एक दूसरे के प्रति विश्वास पैदा करें. लोगो को प्रोत्साहित करें कि आपस में भाई चारा बढ़े आज कि स्थिति यह है कि एक व्यक्ति को पकडने पुलिस आती है तो दूसरा सिर्फ देखता रहता है कुछ बोलता नहीं. अत: आज एक दूसरे के प्रति कोई बोलने वाला नहीं है. इन

परिस्थितियों से जूझकर हमें काम करना है. साने गुरूजी और यदुनाथ थत्ते जी ने जिन उद्देश्यों पर काम करे हमें एक मार्ग दिया है हमें उस पर चलने की आवश्यकता है उनके कार्यो को उनके संदेशों को फैलाने की आवश्यकता है. स्वाभिमान के बगैर इंसान की कोई किमत नहीं .

डॉ तपन भट्टाचार्य ने सभी उपस्थित प्रतिभागियों को स्व. कुंति माथुर स्मृति महिला सम्मान समारोह के बारे में बताया कि यह सम्मान ऐसी महिला को दिया जावेगा जो समाज के लिये उत्कृष्ठ कार्य कर रही हो. यह सम्मान हर साल सितम्बर महीने में दिया जावेगा.

कार्यक्रम का संचालन सुदित्ता सक्सेना ने किया एवं आभार सुश्री बेला जैन ने माना.

- बेला जैन

समाचार भारती-३

''बहुभाषाई कम्प्यूटिंग एवं शिक्षण तथा अधिगम में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग'' विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

आंतर भारती एवं भारतीय ज्ञानपीठ के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला उज्जैन (म.प्र.) में ११ मई को आयोजित की गई. इस अवसर पर तकनीकी विशेषज्ञ डॉ.सी.जयशंकर बाबू ने प्रशिक्षणार्थियों से जाना कि वे कितनी भाषाओं का उपयोग दैनिक जीवन में कंम्प्यूटर पर करते हैं. आप १६ भाषाओं का ज्ञान रखते हैं व कम्प्युटर पर उसका प्रयोग करते हैं. आपको युग मानस के रूप में जाना जाता है जो हिंदी भाषी नहीं हैं और वें हिंदी पत्रिका निकालते है. मार्गदर्शक के रुप में आंतर भारती के सचिव एवं मुख्य संपादक सदाविजय आर्य ने एक कहानी के द्वारा अपना उद्बोधन देकर मार्गदर्शन दिया. कार्यशाला के अंतर्गत प्रशिक्षणार्थियों को युनिकोड के द्वारा बहुभाषाई टंकण वेब कन्टेन्ट ई लेसन्स एवं ब्लॉग निर्माण का अभ्यास कराया गया. इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष श्रीकृष्णमंगल सिंह कुलश्रेष्ठ, उपाध्यक्ष श्रीमती सुशिला जैन, समन्वयक डॉ.रश्मि शर्मा प्राचार्य भारतीय महाविद्यालय, संयोजक श्री सुनील सेंगर प्राचार्य भारतीय ज्ञानपीठ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, श्रीमती मीना शर्मा (एच.ओ.डी.) भारतीय इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज उज्जैन उपस्थित थे.

आभार भारतीय ज्ञानपीठ उ.मा.विद्यालय के प्राचार्य श्री सुनील सेंगर ने व्यक्त किया.